

रान्सीभिरुपास्यतीं (pass.) समासीनां शिलातले MBh. 3, 16167. उपासितो गुरुं भवान्, उपासितो गुरुर्भवता । उपासितं भवता P. 3, 4, 72, Sch. — 2) *sitzen*: न तिष्ठति तु यः पूर्वा (संध्यां) नोपास्ते यश्च पश्चिमात् M. 2, 103. निरुक्तस्यास्य सत्त्वस्य ज्ञान्वूनदसमत्वचि । शष्यव्यं विनीतायामिच्छाम्यक-मुपासितुम् ॥ R. 3, 49, 29. — 3) *einen Platz einnehmen, sich aufhalten*: ऐन्द्रं स्वानमुपासीनाः M. 5, 93. उपास्य रात्रिश्रेयं तं शोणकूले R. 4, 36, 1. — 4) *beiwohnen, an Etwas Theil nehmen*: उपासते ये गृहस्थाः परपाकम् M. 3, 104. विश्वाचसुश्च ये चान्ये ते ऽप्युपासतु मे मखन् MBh. 14, 2871. — 5) *sich nähern, sich irgend wohin begeben*: तस्मात्स्त्रियमथ उपासति ÇAT. Br. 14, 9, 4, 2. ततः कदाचिद्ब्रह्माणमुपासो चक्रिरे सुराः MBh. 1, 3845. 3, 16883. उपासो चक्रिरे द्रष्टुम् BHART. 3, 107. परलोकमुपास्महे 7, 89. उपासते — सत्यम् *gelangen zur Wahrheit* JĀG. 3, 192. — 6) *belagern*: य-द्वेषासते तेनेमो मानुषो पुरं जयति ÇAT. Br. 3, 4, 4, 4. — 7) *einer Sache obliegen, dabei bleiben, sich mit Etwas zu thun machen, ausführen, ausüben*: घृतमेक उपासते RV. 10, 154, 1. AV. 10, 10, 32. ये ऽस्यो देहेमुपासते 5, 17, 17. 10, 6, 31. 10, 31. दशवर्षसकृद्वाणि — राश्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं यास्यति R. 1, 1, 93. अलं हि परिसंतप्य प्रातकालमुपास्यताम् 4, 24, 11. 3. पितरं सत्यधादिनम् । नावमन्य स्वधर्मेण स्वयंवरमुपास्महे 1, 34, 20. भर्तु-रिच्छामुपास्य 2, 33, 27. शास्त्रं गुरुमुखेद्वीर्षमादायोपास्य चासकृत् Suçr. 4, 14, 11. कर्मात्तरमुपासतो ब्रह्मत्युः MBh. 2, 1309. घोरं तप उपासतः (gen. vom partic.) Viçv. 13, 16. ब्रह्मव्रतमुपास्व MBh. 2, 428. संध्याम् 1, 1890. 3, 8072. M. 2, 222. 7, 223. R. 4, 10, 6. 10, 24. Daç. 2, 32. MRĀKŪ. 56, 3. DA-ÇAK. in BENF. Chr. 184, 3. दीर्घसत्त्वमुपास्ते MBh. 1, 668. दीर्घसत्त्वमुपासते 3, 5051. सत्त्वाणि R. 2, 67, 11. यस्तु वर्षशतं पूर्णामिच्छेत्त्रमुपासते (vgl. u. 1) MBh. 3, 4078. ये — अग्निच्छात्रमुपासते M. 11, 42. अग्निच्छात्रमुपासीनां शरभ-ङ्गम् R. 3, 9, 20. — 8) *sich unterziehen, erleiden*: अलं ते पाण्डुपुत्राणो भ-त्तया क्षेममुपासितुम् MBh. 3, 15634. अक्षरान्मुपासीरश्चशौचम् M. 11, 183. — 9) *ausharren, in einer Thätigkeit oder einem Zustande verharren*: अग्निद्वे पृच्छेत्तत्रं तपोवनमरुताम् ॥ उपासो (WEST.: *excubias agere*) च-क्रतुर्विद्वि यतौ परमधन्विनौ । ररुतनुर्मुनिवरम् R. 1, 32, 6. mit einem partic. praes.: ज्ञायद्वैत्राध्वर्युःरुपासीत ÇAT. Br. 3, 9, 3, 11. तं धारयत एवोपासते 4, 5, 9, 3. ये — मां ध्यायत उपासते BHAG. 12, 6. mit einem gerund. auf tva oder अम्: सो ऽङ्कुष्ठप्रनिपीडितम् । कृत्वा महीतलं राजा संवत्सरमु-पासत R. 1, 44, 4. प्रायमुपास्महे (vgl. u. श्रास् 4, b) 4, 33, 11. 5, 32, 23. — 10) *erwartend dabeisitzen, erwarten; zuwarten; das Zuwarten, Nach-sehen haben*: ये चार्चतो मांसभिन्नामुपासते RV. 2, 162, 12. उप ह वै ताव-द्वेवता श्रासते यावन्न समिष्टयज्ञुर्लुहति ÇAT. Br. 1, 9, 2, 12. 27. न श्चःश्रमुपा-सीत को हि मनुष्यस्य श्चो वेद 2, 1, 3, 9. संवत्सरोपासितो (Gegens. संवत्सर-भूतः) हैव तस्य भवति य एवं वेद 6, 7, 4, 39. स्वयंकोम्यशक्ता उपासीत KĀTJ. Ç. 25, 6, 13. यो हि दिष्टमुपासीना निर्विचष्टः सुखं श्रेयत् MBh. 3, 1215. — 11) *ehrend oder dienend nahen, verehren; Ehre erzeigen; sich anhänglich zeigen*: नमस्विन् उप स्वराज्ञमासते RV. 1, 36, 7. तं वा विप्रा उप गिरेम श्रासते 9, 86, 39. उपेनामाधं सुमनस्यमानाः 7, 33, 14. 10, 109, 7. 131, 4. 133, 1. ये ऽसंभूतिमुपासते VS. 40, 9. यो देवमुपासति सनातनम् AV. 10, 8, 22. ते कृत्वा समिधायुपासते 11, 5, 9. 3, 10, 3. 10, 7, 27. 18, 4, 36. अग्निं हि पुरस्कृत्येमाः प्रजा उपासते ÇAT. Br. 10, 3, 5, 3. 6, 2, 10. यो देवतामुपास्ते KĀND. UP. 4, 2, 2. मय्याविश्य मना ये-मो नित्ययुक्ता उपासते BHAG. 12, 2. 9, 15. MBh. 3, 924. 5014. 8102. 8169. 8220. 10826. 1, 2902. 5777. N. 26, 31.

R. 3, 77, 11. — 12) *ehren, achten, anerkennen*: उपासते प्रशिष्यं यस्य देवाः RV. 10, 121, 2. देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते 191, 2. AV. 11, 4, 11. तन्मा नात्रमुपकल्प्योपासते *darum sollst du mich achten* (d. h. *mir folgen*), *indem du ein Schiff zurüstest* ÇAT. Br. 1, 8, 1, 1. 5. यथा श्रेयस्या-गमिष्यत्यावसथेनोपकृतेनोपासीत *wie man, wenn ein Höherer zum Be- such kommt, ihn durch Schmückung der Wohnung zu ehren hat* 2, 3, 4. 8. उपासितगुरु BHART. 3, 52. AK. 3, 2, 51. — 13) *achten* so v. a. *dafür halten, dafür erkennen*: के ते श्रेष्ठमुपासते AV. 11, 8, 5. वृणां मृत्युमुपासते 10, 10, 26. VS. 32, 14 (vgl. damit AV. 6, 108, 4, wo विडुः dem उपासते gleich- steht). तदेतदमृतमित्येवामुत्रोपासीतायुरितिह, प्राण इति हैव उपासते प्राणो ऽग्निः प्राणो ऽमृतमिति वदतः ÇAT. Br. 10, 2, 6, 19. 3, 4, 5. वायुरग्नि-रिति ह शक्वायनिन उपासते *so meinen die* Ç. 4, 5, 1. 3, 2, 20. सत्यं ब्रह्मे-त्युपासीत 6, 3, 1. 2. 11, 4, 4, 9 — 12. 12, 2, 3, 3. 14, 4, 2, 22. 5, 1, 2 (= Bru. ĀR. UP. 1, 4, 10. 2, 1, 2). इति प्राचीनयोग्योपास्व *so betrachte es* TAITT. UP. 1, 6, 2. — 14) *anwenden, gebrauchen*: विरेचनं सन्यगुपास्यमानम् Suçr. 2, 187, 19. वक्तिः सन्यगुपासितः 196, 8. लक्ष्णोपास्यते यस्य कृते *for the sake of which indication is subservient* ŚĪU. D. 19, 6.

— पर्युप 1) *umsitzen, umgeben, umlagern*; mit dem acc.: पर्येह लुधि-ता बाला मातरं पर्युपासते KĀND. UP. 5, 24, 5. पुरुषं सोम्योतोपतापिनं ज्ञातयः पर्युपासते 6, 13, 1. अथ तां वयसि प्राप्ते दासीनां समलंकृतम् । शतं शतं सखीनां च पर्युपासच्छुचिर्गिव ॥ N. 1, 11. पितामहे च के तस्यो सभायां पर्युपासते MBh. 2, 280. R. 1, 7, 5. 3, 17, 28. 4, 22, 4. 31, 31. KUMĀRAS. 2, 38. अशक्ता एव सर्वत्र नरेन्द्रं पर्युपासते PĀNĀT. 1, 271. मुहुद्भिः पर्युपासीनः (pass. Bed.) R. 2, 69, 6. — 2) *auf Etwas sitzen*: प्राकूलान्पर्युपासीनः (KULL.: = प्रागग्रान्दर्शनव्यासीनः) M. 2, 75. — 3) *umwohnen*: एतच्चन्द्रमस्ततीर्थ-मूषयः पर्युपासते MBh. 3, 10412. — 4) *beiwohnen, an Etwas Theil nehmen*: स्त्रियो गीतस्वन् तस्य मुदिताः पर्युपासते MBh. 4, 574. एते मया महाधोराः संग्रामाः पर्युपासिताः AṆ. 8, 21. — 5) *Jmd dienend nahen, Ehre erzeigen, verehren*: तपस्यत्तमृषिं तत्र गन्धर्वी पर्युपासत । सोमदा नाम भद्रं ते उर्मि-लतनया तदा (ergänze: *sagte der Weise*) ॥ R. 1, 34, 39. ब्राह्मणान्पर्युपासीत प्रातरुत्थाय पार्थिवः M. 7, 37. धनन्याश्चिन्तयतो मां ये जनाः पर्युपासते BHAG. 9, 22. 12, 1, 3. MBh. 3, 11056 (p. 371). R. 3, 77, 12. pass.: पर्युपास्यत् लक्ष्म्या RAGH. 10, 63.

— समुप 1) *bei einander sitzen*: तूष्ठीं ते समुपासीना न शक्ता भाषणे तदा R. 2, 103, 1. — 2) *einer Sache gemeinschaftlich obliegen, in Gemein- schaft ausüben, verrichten*: ते त्रयः संध्यां समुपासत R. 2, 87, 19. von einer einzelnen Person: संध्यां तां समुपासत 4, 10, 24. GRHJASĀṆG. 2, 67. — 3) *in Gemeinschaft Jmd Ehre erzeigen, verehren*: केशवं समुपासते । यत्र ब्र-ह्मादयो देवाः MBh. 3, 5067. नृपतिरिव — समुपास्यते जनेन MRĀKŪ. 33, 4. pass. mit einem sing.: समुपास्यत — श्रिया RAGH. 8, 14.

— परि 1) *herumsitzen, sich um Jmd (acc.) sammeln*: पवित्रवत्तः परि वाचमासते RV. 9, 73, 3. परिं त्वासते निधिभिः सखयः 10, 179, 2. 8, 31, 1. 9, 86, 1. तामेतद्देवाश्च पर्यासते ये चेमे ब्राह्मणाः ÇAT. Br. 1, 3, 2, 8. — 2) *sitzen bleiben, unthätig bleiben*: अमृत इत्यर्थासीत हूरम् RV. 7, 20, 7. प्र प्राण्ये यत्ति पर्यन्य श्रासते 3, 9, 3. किमन्ये पर्यासते ऽस्मत्स्तेमोभिरुश्चिना (ऋषिरवीच्यत्) 8, 8, 8. — 3) *sich anschliessen von (acc.), supersedere*: युवो ररावा परि सध्यमासते RV. 10, 40, 7.

— प्रति *sich gegen Etwas (acc.) setzen* ÇAT. Br. 3, 6, 2, 20.